सेवारत अप्रशिक्षित अध्यापकों पर दूरस्थ शिक्षा माध्यमों से प्राप्त प्रशिक्षण प्रभाव पर एक अध्ययन

डा. भानु प्रकाश
ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेण्ट सांइस एण्ड टैक्नोलाजी बरेली

सारांश
सेवारत अप्रशिक्षित दोनों स्तरों पर प्राप्त प्रशिक्षण युक्त अध्यापकों के व्यवहार पर प्रभाव देखने पर सही पढ़ा है। प्रशिक्षण व्यक्ति की व्यावसायिक दक्षता को बढ़ाने में सहायक हुआ है। सेवा से सम्बन्धित आवश्यकताओं पर भी सकारात्मक रूप से प्रशिक्षण प्रभावी रहा है। दूरस्थ शिक्षा माध्यम से प्रशिक्षण सम्बन्धित कार्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति भी हो रही है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की अध्यापकों के लिए एक व्यावहारिक उपयोगिता पाई गई। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के एक अंग के रूप में प्रशिक्षण के अनेको सकारात्मक पक्ष सामने आए है। इससे दूरस्थ शिक्षा माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है।

मुख्य बिन्दु: *प्रस्तावना, आवययकता महत्व, उद्देश्य, परिकल्पना, विधि, निष्कर्ष, सुझाव संदर्भ सूची*

१.प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जो मानव के वाह्म एवं अन्तिरिक दोनों रूप में विकास में सहयोग कर उसकी सास्कृतिक प्रगति को विकसित करते हुए आत्मनिर्भरता की योग्यता प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक, आध्यत्यिक, शारीरिक संवेगात्मक, वैद्धिक तथा अन्तिरिक ज्ञान को बाहर लाने में सहयोग करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व में ऐसा परिवर्तन लाती है। जिससे वह निरन्तर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होता है।

सेवाकालीन अप्रशिक्षित अध्यापक शिक्षा अध्यापकों में नवीन अर्न्तदृष्टि समझ एवं बोध उत्पन्न करती है। उन्हे जीवन के हर क्षेत्र में सुधार हेतु प्रेरित करती है। सेवाकालीन अप्रशिक्षित शिक्षा अध्यापकों को परिवर्तनों का सामना करने तथा उनसे लाभ उठा पाने के योग्य बनाने हेतु तैयार करने तथा उनसे लाभ उठा पाने के योग्य बनाने हेतु तैयार करती है। यह शिक्षा उन्हे नवीन चिन्तन करने के लिए योग्यता प्रदान करती है, साथ ही नवीन विचारों को सतत् तथा रचनात्मक रूप से प्रयुक्त करने के योग्य बनाती है। अध्यापक तैयार करने से संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त करना, इसे हम सेवा पूर्व शिक्षा कहते है। दूसरा अपनी अध्यापिकीय सेवा के दौरान जब अध्यापक अपनी व्यावसायिक प्रगति हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण में सम्मिलित होता है इसे सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कहते है।

२.अध्ययन की आवश्यकता

विभिन्न स्तरों पर सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षक काफी पहले से शिक्षण कार्य कर रहे है, तब से अब तक के समय में शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन हो चुके हैं। इस परिवर्तनों के अनुरूप नवीन परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षकों हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे है। ऐसे में शिक्षा में विभिन्न स्तर के शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास हेतु चलाये जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं उनमें शिक्षकों की प्रतिभागिता के बारे में स्पष्ट जानकारी पाना आवश्यक हो जाता है। माध्यमिक स्तर पर आने वाले छात्र–छात्राओं किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे होते है। अतः उनकी विभिन्न प्रकार की

शारीरिक एवं मानसिक समस्यायें होती हैं। जिन्हें समझना तथा उनके उचित समाधान की योग्यता शिक्षकों में होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को समय–समय पर अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली विभिन्न नवीन जानकारी से परिचित कराया जाना चाहिए।

३.उद्देश्य

1.डी0एल0एड0 स्तर पर सेवारत अप्रशिक्षण प्राप्त आध्यापकों के प्रशिक्षण में प्रवेश लेने के उद्देश्य का अध्ययन।
2.बी0एड0 स्तर पर सेवारत अप्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के उद्देश्य का अध्ययन।
3.डी0एल0एड0 स्तर पर सेवारत अप्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के व्यवहार पर प्रशिक्षण से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
4.बी0एड0 स्तर पर सेवाकालीन अप्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के प्रशिक्षण के प्रशिक्षण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

४.परिकल्पना

डी0एल0एड0 एवं बी0एड0 सेवारत अप्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के उददेश्य एवं प्रभाव के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

५.सीमांकन

प्रस्तुत अध्यापक बरेली जिले के बी0एड0 एवं डी0एल0एड0 में पढ़ाने वाले अध्यापकों तक सीमित रखा गया है।

६.उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित एक प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। प्रश्नावली को विशेषज्ञों से सुधार करवा कर प्रश्नावली को अन्तिम रूप दिया गया है।

७.आकड़े संकलन प्रक्रियाः

तालिका से स्पष्ट किया गया कि डी0एल0एड0 स्तर के प्रशिक्षण प्राप्त अधिकांश 50 से 64.47 प्रतिशत अध्यापकों के व्यवहार पर प्राप्त प्रशिक्षण का कुछ सीमा तक प्रभाव पड़ा हो। जैसे अधिकतर 64.47 प्रतिशत उत्पाद प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक मूल्यों का विकास हुआ। 58.68 प्रतिशत को सही मूल्यांकन प्रविधियों के ज्ञान और कौशल की प्राप्ति हुई है। 58.60 में शिक्षण प्रवीणता में विकास हुआ। 57.16 प्रतिशत द्वारा विकाससीन शिक्षा की सामाजिक पृष्ठिभूमि को जाना गया। 54.77 प्रतिशत सहायक शिक्षण सामग्री का उचित प्रस्तुतीकरण हो रहा है। 53.64 प्रतिशत का सेवा में स्थायीकरण हुआ है। 53.08 प्रतिशत का सेवा में पदोन्नती हुई है। 52.36 प्रतिशत अतिरिक्त वेतन वृद्धि हुई है। 50 प्रतिशत उत्पाद प्रशिक्षर्थी शिक्षण में विभिन्न माध्यमों विधियों और तकनीकी का प्रयोग कर रहे है।
आकड़ो द्वारा स्पष्ट किया गया है कि बी0एड0 स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त सर्वाधिक 81.66 से 91.66 प्रतिशत अध्यापकों के पत्राचार पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के उद्देश्य से अग्रलिखित प्रभाव पड़ा है। जैसे अधिकतर 64.47 प्रतिशत उत्पाद प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक मूल्यों का विकास हुआ। 58.68 प्रतिशत को सही मूल्यांकन प्रविधियों के ज्ञान और कौशल की प्राप्ति हुई है। 58.60 में शिक्षण प्रवीणता में विकास हुआ। 57.16 प्रतिशत द्वारा विकाससीन शिक्षा की सामाजिक पृष्ठिभूमि को जाना गया। 54.77 प्रतिशत सहायक शिक्षण सामग्री का उचित प्रस्तुतीकरण हो रहा है। 53.64 प्रतिशत का सेवा में स्थायीकरण हुआ है। 53.08 प्रतिशत का सेवा में पदोन्नती हुई है। 52.36 प्रतिशत अतिरिक्त वेतन वृद्धि हुई है। 50 प्रतिशत उत्पाद प्रशिक्षर्थी शिक्षण में विभिन्न माध्यमों विधियों और तकनीकी का प्रयोग कर रहे है।

८.परिणाम एवं व्याख्या

डी0एल0एड0 स्तर का कुछ सीमा तक प्रभाव देखा गया। डी0एल0एड0 स्तर के अधिकांश अध्यापकों में शैक्षिक मूल्यों का विकास हुआ विद्यालीय शिक्षा की सामाजिक पृष्ठभूमि में जाना गया छात्रों के मनोविज्ञान को जाना गया। सहायक सामग्री का उचित प्रस्तुतीकरण ही रहा है, सेवा में स्थायीकरण पदोन्नति एवं वेतनवृद्धि हुई है। बी0एड0 स्तर पर

प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अध्यापकों पर प्रशिक्षण का कुछ सीमा तक प्रभाव देखा गया है। अधिकांश अध्यापकों की सेवा में पदोन्नति हुई, विभिन्न कौशलों की प्राप्ति हुई, सेवा में स्थायीकरण हुआ तथा शिक्षण प्रवीणता में विकास हुआ। अतः दूरस्थ शिक्षा अध्यापकों पर आधारित सेवारत अप्रशिक्षण का सकारात्मक प्रभाव अध्यापकों के व्यवहार पर पड़ा है।

९.निष्कर्ष

डी0एल0एड0 एवं बी0एड0 दोनों स्तरों का प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के व्यवहार पर प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ा है। प्रशिक्षण उनकी व्यावसायिक दक्षता को बढ़ाने में सहायक हुआ है। साथ ही सेवा सम्बंधी आवश्यकताओं पर भी धनात्मक रूप से प्रशिक्षण प्रभावकारी हुआ है। इससे दूरस्थ शिक्षा माध्यमों से प्रशिक्षण पदान करने के उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है।

संदर्भ सूची

1. पाल, हंसराज शर्मा, मंजू लता– प्रतिभाशालियों की शिक्ष, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. भटनागर, ए बी– अधिगमकर्ता का विकास लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. भटनागर, ए बी – शिक्षण अनुसंधान, लाल बुक डिपो मेरठ।
4. लाल रमन बिहारी – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास, आर0लाल बुक डिपो मेरठ।
5. गिलफोर्ड जेपी 1956 – फण्डामेन्टल स्टेटिस्टक्स, मैग्रा हिल न्यूयॉर्क।